# विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

**तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र**

विज्ञप्ति ( साप्ताहिक ) : वर्ष 23 : अंक 49 : नई दिल्ली : 2-8 मार्च 2018


परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए पश्चिम ओड़िशा में सुखसातापूर्वक गतिमान हैं। इस क्षेत्र में आचार्यप्रवर के प्रति जैन एवं जैनेतर जनता की भक्ति-भावना विशेष रूप से दृष्टिगोचर हो रही है। न केवल तेरापंथी श्रद्धालु, अपितु जैनेतर लोग भी प्रातः चार बजे से ही पूज्यप्रवर के चरणस्पर्श हेतु पूज्य सन्निधि में पहुंचने प्रारम्भ हो जाते हैं। कई जैनेतर लोग प्रायः प्रतिदिन विहार में पैदल चलते हैं। सायंकाल होने वाले चरणस्पर्श के संदर्भ में जैन एवं जैनेतर लोगों की लंबी कतार बन जाती है। ओड़िया लोगों में भी आचार्यप्रवर के दर्शन का आकर्षण और पूज्यप्रवर के प्रति श्रद्धाभाव स्पष्ट देखने को मिल रहा है। पश्चिम ओड़िशा की यात्रा की सम्पन्नता के उपरान्त पूज्यप्रवर २ अप्रेल २०१८ को अहिंसा यात्रा के तेरहवें राज्य के रूप में आंध्रप्रदेश में पावन प्रवेश करेंगे। इस राज्य के विशाखापट्टनम् में १८ अप्रेल को अक्षय तृतीया तथा २४ व २५ अप्रेल को क्रमशः पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव का भव्य आयोजन होगा।

## परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ओड़िशा में

### साधना का सुन्दर और सुगम प्रयोग है जप

**२१ फरवरी।** परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः सूर्यादय से पूर्व बलांगीर में विराजमान थे। अर्हतवन्दना आदि के संदर्भ में मुनिवृन्द पूज्यसन्निधि में उपस्थित थे। उसी समय सूचना मिली कि ओड़िशा प्रान्तीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री केवलचंदजी जैन का देहावसान हो गया। वे रात्रि में बलांगीर में ही अपनी बहन श्रीमती रश्मि (धर्मपत्नी श्री दिनेश जैन) के श्वसुराल में सोए थे और सोए-सोए ही उनका प्राणांत हो गया। इस संवाद को सुनकर पश्चिम ओड़िशावासी स्तब्ध थे। श्री केवलचंदजी पूज्यप्रवर की पश्चिम ओड़िशा यात्रा की व्यवस्थाओं के संदर्भ में निष्ठा और उत्साह के साथ जुटे हुए थे। कल ही उन्होंने अपनी सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के दायित्व प्रतीक के रूप में जैन ध्वज थामा था। पूज्यप्रवर के पश्चिम ओड़िशा स्तरीय स्वागत समारोह की सफलता से भी आत्मतुष्टि की अनुभूति कर रहे थे। पूज्यप्रवर की आगामी यात्रा के संदर्भ में भी उनके मन में अतिशय उत्साह और उल्लास था, किन्तु नियति को कुछ और ही मंजूर था।

परम पूज्य आचार्यप्रवर सूर्योदय के उपरान्त और विहार से पूर्व उनकी बहन के श्वसुराल में पधारे तथा उनकी पार्थिव देह के निकट आसीन होकर 'श्रद्धा विनय समेत' गीत का संगान किया। पूज्यप्रवर ने उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमादेवी जैन आदि परिजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया। पूज्यप्रवर वहां से प्रस्थान कर पुनः तेरापंथ भवन के निकट पधारे और हरड़ाताल की ओर प्रस्थित हुए।

आज का विहार पथ कुछ वन्य और पहाड़ी क्षेत्र के रूप में था, इसलिए उसमें आरोह-अवरोह भी स्वाभाविक थे। प्रायः पूरे पथ में आबादी बहुत ही कम दृष्टिगोचर हुई। पूज्यप्रवर कुल लगभग १६.० कि.मी. का विहार कर हरड़ाताल में स्थित धोबा हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'अध्यात्म की साधना में जप एक सुन्दर और सुगम प्रयोग है। उपवास, बेला आदि तपस्या हर किसी के लिए करना आसान न भी हो, किन्तु जप करना आसान हो सकता है। शुद्ध लक्ष्य, शुद्ध उच्चारण, शुद्ध भावना और शुद्ध अर्थबोध

के साथ किया जाने वाला जप स्वादिष्ट फल देने वाला हो सकता है। मंत्र का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए और साथ में उसका अर्थबोध भी होना चाहिए। जप के द्वारा चित्त निर्मल बन सकता है। मंत्र मित्र बन जाए तो धार्मिक साधना में वह बड़ा लाभदायी सिद्ध हो सकता है।

नमस्कार महामंत्र जैन शासन में सुप्रतिष्ठित है। इसमें मानों अध्यात्म का साम्राज्य है। यह वीतरागता से ओतप्रोत है। इसके प्रथम पद 'णमो अरहंताणं' में अर्हतों को नमस्कार किया गया है। वे वीतराग, केवलज्ञानी और तीर्थंकर बन चुके होते हैं, वे अनंत चतुष्टयी--अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत आनंद और अनंत शक्ति से सम्पन्न होते हैं, पूर्णतया वीतराग होते हैं और अधिकृत प्रवचनकार, प्रवक्ता होते हैं। उनकी बात कभी गलत नहीं हो सकती। क्योंकि गलत बात करने का हेतु है राग-द्वेष। तीर्थंकर राग-द्वेष से पूर्णतया मुक्त होते हैं। वे पूर्णज्ञानी भी होते हैं। इसलिए भी उनकी कोई भी बात गलत नहीं हो सकती। वे चार घात्य कर्मों (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय) का नाश कर चुके होते हैं। दूसरे पद 'णमो सिद्धाणं' में सिद्धों को नमस्कार किया गया है। सिद्ध आत्माएं वीतराग और अनंत चतुष्टयी सम्पन्न बनकर और आठों कर्मों का नाश कर मोक्ष में विराजमान हो चुकी होती हैं। तीसरे पद 'णमो आयरियाणं' में आचार्यों को नमस्कार किया गया है, वे भी वीतराग होते हैं अथवा वीतरागता की साधना करने वाले होते हैं। वीतरागता की साधना का पथदर्शन देने वाले होते हैं और तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। वे स्वयं ज्ञानी होते हैं और दूसरों को ज्ञान देने वाले, अर्थबोध देने वाले होते हैं। वे व्याख्या के अधिकारी होते हैं तथा जिनशासन के अधिनेता होते हैं। चौथे पद 'णमो उवज्झायाणं' में उपाध्यायों को नमस्कार किया गया है। उपाध्याय वीतरागता के साधक और वीतराग वाणी के अध्येता-अध्यापयिता होते हैं। पांचवें पद 'णमो लोए सव्वसाहूणं' में लोक के समस्त साधुओं को नमस्कार किया गया है। साधु महाव्रतों को पालन करने वाले होते हैं। इस प्रकार यह महामंत्र आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित शिक्षकों और ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री मनोज कुमार मिश्र ने कहा--'आज हमारा और हमारे इस विद्यालय का परम सौभाग्य है जो आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष अपनी पदयात्रा के दौरान यहां पधारे हैं। आपके आगमन से हमारा विद्यालय पावन हो गया है। मैं विद्यालय परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं।'

## भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण में होता है बड़ा अंतर

**२२ फरवरी।** परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः हरड़ाताल से धुबलपड़ा की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती 'बारपुड़िया' और 'डुलुसर' के ग्रामीण बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। 'सुखतेल' नामक नदी पर बना हुआ पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावनता को प्राप्त हुआ। 'चुड़ापल्ली' के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। चुड़ापल्ली में स्थित श्री राजकुमार अग्रवाल परिवार के निवास पर पधारकर आचार्यप्रवर ने वृद्ध महिला को दर्शन दिए। पूज्यप्रवर को अपने आंगन में पाकर तेरापंथी परिवार से संबंधित यह अग्रवाल परिवार अहोभाव की अनुभूति कर रहा था। परिवार की महिलाओं ने आचार्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया। लगभग १३.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर धुबलपड़ा में स्थित यू.जी.एम.ई. स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय के एक श्लोक में चार बातें बताई गई हैं। उनका मूल है वैराग्य। एक आदमी भौतिक दृष्टिकोण वाला होता है और दूसरा आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाला होता है। एक चीज में एक आदमी को आनंद आता है, किन्तु वह दूसरे को आकर्षित नहीं करती। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की मानसिकता और परिस्थिति के अनुसार उनकी रुचि आदि में काफी अंतर हो सकता है। वैराग्ययुक्त दृष्टिकोण व्यक्ति को भौतिक गीत आदि विलाप जैसे

लगते हैं, सभी नाटक आदि विडंबना जैसे लगते हैं, सारे आभरण (आभूषण) भार जैसे लगते हैं। सारे काम-भोग दुःखावह लगते हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति को भौतिक गीत, नाटक, आभूषण और काम-भोग आकर्षित नहीं कर पाते। भौतिक गीत, नाटक, आभूषण और काम-भोग एक बार अच्छे लग सकते हैं, किन्तु बाद में वे दुःखदायी बन सकते हैं।

भौतिक आभूषण साधक के लिए त्याज्य होते हैं, किन्तु आध्यात्मिक आभूषण तो उपहार होते हैं, श्रृंगार होते हैं। जीवन में सद्गुणरूपी आभूषणों को आत्मसात करना चाहिए। हाथ का सद्गुणरूपी आभूषण है--सुपात्र दान। कंगन हाथ की बाह्य तथा दान उसकी सद्गुणात्मक शोभा है। सिर का सद्गुणरूपी आभूषण है--अपने गुरु के चरणों में प्रणाम करना। सत्य वाणी मुंह का सद्गुणरूपी आभूषण है। कुंडल कान की बाह्य शोभा है, किन्तु उसका सद्गुणरूपी आभूषण है--श्रुत (आगम) वाणी का श्रवण। हृदय का सद्गुणरूपी आभूषण है--स्वच्छता, सरलता, पवित्रता। आदमी का मन निर्मल रहना चाहिए। पौरुष (शक्ति) का होना भुजाओं का सद्गुणरूपी आभूषण है। शक्ति किसी को कष्ट देने में नहीं, किसी का कल्याण करने और किसी की निरवद्य सेवा में प्रयुक्त होनी चाहिए। आदमी अपने जीवन में सद्गुणरूपी आभूषणों को धारण करने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा से कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीणों व शिक्षिकाओं ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

यू.जी.एम.ई. स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती तेजकांति पटेल ने कहा--'जैन धर्म के महान गुरुजी आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से हमारा विद्यालय पावन हो गया है। मैं स्वयं भी धन्यता की अनुभूति कर रही हूं। आप द्वारा हम सभी पर की गई कृपा के लिए पूरा गांव आपका कृतज्ञ है। यह तो भगवान की ही साक्षात् कृपा है कि हमें ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ है। आपके तीनों उपदेशों का समस्त धर्म के लोग सम्मान करते हैं। मैं भगवानतुल्य गुरुजी से इस आशीर्वाद को देने की प्रार्थना करती हूं कि मेरे विद्यालय की उन्नति हो।'

सेवानिवृत्त शिक्षक श्री ध्रुवचरण साहू ने भी आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

आज दिन-रात्रि में ग्राम्यजन बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन करने आए। आचार्यप्रवर ने यथावसर ग्रामीणों को पावन आशीर्वाद प्रदान किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में पधारकर ग्रामवासियों को प्रतिबोध प्रदान किया।

## रामपुर में तेरापंथ के श्रीराम का पावन पदार्पण

**२३ फरवरी।** परमश्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः धुबलपड़ा से रामपुर की ओर प्रस्थित हुए। धुबलपड़ा के ग्रामीणों ने अपने-अपने घरों के बाहर खड़े होकर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। इस क्षेत्र में 'कपास' की खेती बहुलतया दृष्टिगोचर हुई। प्रायः सूखे पौधों के बीच श्वेत कपास अपनी विशिष्ट पहचान लिए दृष्टिगोचर हो रहा था। विहार मार्ग से करीब डेढ़ किलोमीटर भीतर स्थित 'भैंसा' नामक गांव के एक अग्रवाल परिवार ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपने गांव में पधारने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने उस परिवार को वहीं से मंगलपाठ सुनाया। सरमुहान के ग्रामीण मार्ग के किनारे रंगोली सजाकर और उस पर कलश, फूल, पत्ते, नारियल आदि सजाकर पूज्यप्रवर के स्वागत में बड़ी संख्या में खड़े थे। आचार्यप्रवर के निकट पधारते ही ग्रामीण महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यप्रवर का स्वागत किया। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने ग्रामीणों को पावन संबोध प्रदान किया। बालमुनि केशीकुमारजी ने पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पाथेय का ओड़िया भाषा में अनुवाद कर ग्रामीणों को बताया। आचार्यप्रवर ने 'यह है जगने की बेला' गीत का आंशिक संगान भी किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने ग्रामीणों को संकल्पत्रयी स्वीकार कराई।

विहार के दौरान चंपालाल अग्रवाल नामक एक व्यक्ति ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने उनके समीप अपने चरण थामे तो वे बोले--'मैं आपको रोज टीवी पर देखता हूं। आज साक्षात् दर्शन कर धन्य हो गया।' इसी प्रकार पटनागढ़ की सुनीत अग्रवाल नामक एक महिला अपने परिवार के साथ पूज्यप्रवर के सम्मुख उपस्थित हुई और बोली--'गुरुजी! मुझे पहले धार्मिक कार्यों में रुचि कम ही रहती थी, किन्तु आपका चित्र देखते-देखते मन धर्म में रम गया।'

मार्गवर्ती 'उल्ला' गांव के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के स्वागत में लौकिक मंगल द्रव्य सजाकर खड़े थे। आचार्यप्रवर ने उनके समीप अपने चरण थामकर 'सजग बनो बीती जा रही घड़ी' गीत का आंशिक संगान किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार बालमुनि केशीकुमारजी ने उन्हें ओड़िया भाषा में पूज्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में संक्षिप्त अवगति देते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई। 'कुसुमकानी' गांव के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रामपुर के बाहरी भाग में स्थित 'ओम इंटरनेशनल स्कूल' के विद्यार्थी मार्ग के समीप पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। आचार्यप्रवर ने उनके निकट कुछ क्षण रुककर 'संयममय जीवन हो' गीत का आंशिक संगान करते हुए उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के संकल्प भी करवाए गए।

रामपुर के श्रद्धालु अपने राम को अपने गांव में पाकर फूले नहीं समा रहे थे। पटनागढ़ के श्रद्धालु भी उनके साथ अभिन्न-से बने हुए थे। गांव की गलियों में आज अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। पटनागढ़ नगरपालिका द्वारा रामपुर गांव के प्रवेश मार्ग को 'शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण मार्ग' के रूप में अभिहित किया गया है। मार्ग के प्रारम्भ स्थल पर नगरपालिका द्वारा 'ओड़िया भाषा' में लगाया गया मार्ग के नाम से युक्त बोर्ड पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। रामपुर-पटनागढ़ का जैनेतर समाज भी आचार्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में उत्फुल्ल बना हुआ था। कई जैनेतर घरों के आगे रंगोलियां सजी हुईं थीं और उन पर सजे हुए थे कलश, फूल, नारियल, दीपक आदि लौकिक मंगल पदार्थ। ग्रामीण महिलाओं के 'हुलाहुली' नाद से गांव की गलियां गुंजायमान बनी हुई थीं। लोग पुष्पवृष्टि के द्वारा पूज्यप्रवर का स्वागत करने के लिए सन्नद्ध थे। उन्हें समझा-समझाकर रोका जा रहा था। इसी बीच एक भावविभोर महिला ने पूज्यप्रवर की ओर फूल उछाल ही दिए।

पूज्यप्रवर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहे थे, स्थान-स्थान पर बड़ी संख्या में खड़े दर्शनार्थी भूमि पर बैठकर पूज्यप्रवर को पंचांग वंदन कर रहे थे। पूज्यप्रवर उनके निकट कुछ क्षण रुककर उनके आंतरिक भावों को स्वीकार कर उन्हें मंगल आशीष प्रदान कर रहे थे। सैंकड़ों जैन-जैनेतर लोग पूज्यप्रवर के पदचिन्हों का अनुगमन कर रहे थे, जिसके कारण गांव की मिट्टी का गुबार मानों अबीर बनकर उड़ रहा था। कई स्थानों पर अक्षम वयोवृद्ध लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित बन रहे थे तो एक स्थान पर उन्नीस दिवसीय शिशु पर भी पूज्यप्रवर ने आशीष वृष्टि की।

मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला मंच, लखेश्वर गण्डा समाज, ब्लड डोनर एसोसिएशन, कलिंग वैश्य समाज, गायत्री परिवार, मेहर समाज, मुलिया समाज, ओड़िया समाज आदि संस्थाओं और समाजों से जुड़े सैंकड़ों लोग स्वागत जुलूस में संभागी बने हुए थे। ओड़िया भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता पटनागढ़ राजपरिवार के मुखिया व्यक्ति तथा स्थानीय विधायक कनकवर्धनसिंह देव सपत्नीक पूज्यप्रवर के स्वागतार्थ लंबे समय से खड़े थे, किन्तु पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व उन्हें आवश्यक कार्यवश लौटना पड़ा।

आचार्यप्रवर करीब १०.५ कि.मी. का विहार कर रामपुर (पटनागढ़) के तेरापंथ भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के वक्तव्य हुए। पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी ने गुरुदेव तुलसी की पश्चिम ओड़िशा यात्रा का एक प्रसंग सुनाया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी गुणों से सज्जन और दुर्गुणों से दुर्जन बनता है। अच्छा व्यक्ति सज्जन और बुरा व्यक्ति दुर्जन होता है। सज्जन और दुर्जन दोनों में रूप, इन्द्रियों आदि की समानता हो सकती है, किन्तु उनके चरित्र में बड़ा अंतर होता है। जीवन में चेहरे की सुन्दरता से अधिक महत्त्व चरित्र का होता है। दुर्जन की विद्या विवाद में प्रयुक्त हो सकती है, जबकि सज्जन अपनी विद्या से अपने और दूसरों के ज्ञान को वृद्धिंगत करने का प्रयास कर सकता है। दुर्जन का धन उसके अहंकार का निमित्त बन सकता है, जबकि सज्जन के पास धन होता है तो उसका दान कर सकता है। आदमी को धन का अहंकार नहीं करना चाहिए। लक्ष्मी को चंचल कहा गया है। वह आज है, कल रहेगी अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। इसलिए आदमी धन को अनपेक्षित बहुमान न दे, यह काम्य है। दुर्जन की शक्ति किसी को कष्ट देने, सताने में प्रयुक्त हो सकती है, जबकि सज्जन की शक्ति दूसरों की सेवा, रक्षा आदि में लग सकती है।

आदमी को अपनी सज्जनता के विकास का प्रयास करना चाहिए। सज्जन और दुर्जन की पहचान कर दुर्जन से दूर रहना चाहिए। क्योंकि दुर्जन का प्रेम भी ज्यादा काम का नहीं होता। कहा गया है कि दुर्जन किसी से स्नेह नहीं करता। किसी से स्नेह कर ले तो वह ज्यादा टिक नहीं सकता और उसका स्नेह ज्यादा टिक जाए तो वह खराब फल देने वाला बन सकता है। इसके विपरीत सज्जन व्यक्ति गुस्सा नहीं करता। कदाचित् वह गुस्सा कर भी ले तो वह गुस्सा ज्यादा देर टिक नहीं सकता और सज्जन का गुस्सा लंबे समय तक टिक भी जाए तो वह अच्छा फल देने वाला बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज हम रामपुर गांव में आए हैं। इसके नाम के साथ 'राम' जुड़ा हुआ है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के नाम के साथ भी 'राम' जुड़ा हुआ था 'तुलसीराम'। इस एरिया में गुरुदेव तुलसी पधारे थे, साध्वीप्रमुखाजी ने उस समय का प्रसंग भी सुनाया। गुरुदेव के पधारने के लगभग अड़तालीस वर्षों बाद इस भूमि पर हम विहरण कर रहे हैं। मानों हम उनका अनुगमन कर रहे हैं। रामपुर की जनता में खूब धर्मोद्योत होता रहे, यह काम्य है।'

कार्यक्रम में रामपुर, पटनागढ़ और विभिन्न क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने करीब ११.११ बजे से परम पूज्य आचार्यप्रवर से सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार की। पूज्यप्रवर ने समुपस्थित जैन-जैनेतर जनता को अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए।

रामपुर तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री बजरंगलाल जैन, मंत्री श्री गोविंद जैन, तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री श्री मनीष जैन, श्रीमती रश्मि-पायल जैन, श्री पवन जैन, श्रीमती शिवानी जैन, अग्रवाल समाज की ओर से श्री नकुल अग्रवाल, ओड़िशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के मंत्री श्री केशवनारायण जैन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। रामपुर तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

आज रामपुरवासियों के साथ-साथ पटनागढ़ के निवासी भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और उपासना से लाभान्वित हुए। रामपुर तेरापंथी सभा के अंतर्गत पटनागढ़ के श्रद्धालु भी जुड़े हुए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्तमान में रामपुर में तेरापंथ समाज के २८ तथा पटनागढ़ में ७ परिवार निवासित हैं।

**गंगासागर में पावन गंगा का समागमन**

**२४ फरवरी।** परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः रामपुर से गंगासागर की ओर प्रस्थान किया। रामपुर के अनेक तेरापंथी और जैनेतर परिवारों ने अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के

दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। रामपुर यूपी स्कूल के विद्यार्थी पूज्यप्रवर के पावन संबोध से लाभान्वित हुए। उन्हें अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई गई। रामपुर में ओड़िया समाज की एक वयोवृद्ध महिला को दर्शन देने पूज्यप्रवर उनके घर पधारे तो उनका पूरा परिवार भावविभोर हो उठा। आचार्यप्रवर ने उस महिला को मंगलपाठ सुनाया। परिवार के लोग पूज्यप्रवर को अर्पित करने के लिए शाल और फूल लेकर आए। उन्हें साधुचर्या की अवगति दी गई।

पूज्यप्रवर पटनागढ़ के बीच से गंतव्य की ओर पधार रहे थे। आचार्यप्रवर का कुछ क्षणों के लिए पदार्पण भी पटनागढ़वासियों को उल्लसित बनाए हुए था। सैंकड़ों लोग स्थान-स्थान पर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। शहर के प्रारंभिक छोर पर मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी पंचायत धर्मशाला कमेटी, सुवर्णरेखा महिला शाखा आदि से जुड़े हुए लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के स्वागत में खड़े थे। आचार्यप्रवर के निकट पधारते ही उन्होंने बुलंद घोषों के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त किया। कई जैनेतर घरों के बाहर सजी रंगोलियां और उन पर सजे कलश, दीप, नारियल, फूल आदि लोगों के उल्लास के साक्षी थे। पूज्यप्रवर अपने चरण थामकर घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर उनसे संबंधित लोगों को दर्शन देकर मंगलपाठ सुना रहे थे। ओड़िया समाज की महिलाएं आचार्यप्रवर के सम्मुख फूल उछालते हुए 'हुलाहुली' नाद के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रही थीं। उन्हें पुष्पवृष्टि से रोकने की कोशिश की जा रही थी, किन्तु कहीं-कहीं भावना के वेग को रोकना कठिन हो रहा था। कई लोग पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन कर अपनी विनयांजलि अर्पित कर रहे थे। जैनेतर लोगों की भावना इतनी प्रबल थी कि जैन एवं जैनेतर का भेद करना दुरूह हो गया। इस प्रकार पटनागढ़ के बीच से निकलने वाला विहार पथ महाश्रमणमय बना हुआ था। मार्ग के निकट दर्शनार्थ खड़े गंगासागर यूपी स्कूल के विद्यार्थियों के समीप पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें मंगल संबोध और पावन आशीर्वाद प्रदान किया। लगभग ७.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर सरकारी यू.पी. स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में चार चीजें दुर्लभ होती हैं--

१. मनुष्यत्व--चौरासी लाख जीव योनियों में संसारी प्राणी की आत्मा विहरण करती है और उन योनियों में मनुष्य जन्म दुर्लभ होता है। इस माने में हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें मानव जीवन प्राप्त है। अनंत-अनंत जीव तो अब तक भी मानव जीवन प्राप्त नहीं कर सके हैं।

२. धर्मश्रवण--कितने-कितने प्राणियों ने अब तक धर्म की बात को सुना ही नहीं है। मनुष्य जन्म मिल जाने पर भी धर्मश्रवण का सुअवसर सबको नहीं मिलता। कितने मनुष्यों को भी अब तक यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है।

३. धर्म श्रद्धा--धर्मश्रवण का सुअवसर मिल भी जाए तो उस पर श्रद्धा का होना दुर्लभ होता है।

४. संयम में पराक्रम--धर्म में श्रद्धा होने पर भी उसमें पराक्रम का होना दुर्लभ होता है। जिस मनुष्य को चारों दुर्लभ चीजें प्राप्त हो जाती हैं, उसका जीवन सुफल हो जाता है।

संयम में पराक्रम के लिए शक्ति भी अपेक्षित होती है। आदमी के पास शक्ति का होना महत्त्वपूर्ण होता है। शक्तिमान व्यक्ति संयम में पराक्रम कर सकता है। मात्र बड़ा होने का विशेष महत्त्व नहीं होता। हाथी कितना स्थूलकाय होता है, किन्तु एक छोटा-सा अंकुश उसे वश में कर सकता है। अंधकार कितना सघन होता है, किन्तु एक छोटा सा दीया उसे नष्ट कर सकता है। छोटा सा वज्र विशाल पहाड़ को चूर-चूर कर सकता है। इस प्रकार जिसमें शक्ति होती है, वह बलवान होता है। आदमी अपनी शक्ति को पहचाने और उसका दुरुपयोग करने से बचे। शक्ति के विकास का भी प्रयास होना चाहिए।

कई प्रकार के बल होते हैं--तनबल, मनबल, धनबल, जनबल और वचनबल। शारीरिक शक्ति हो तो आदमी शारीरिक श्रम कर सकता है। तनबल के साथ मनबल (मनोबल) भी रहना चाहिए। मनोबल होता है तो आदमी कुछ कठिन कार्य भी कर सकता है। अन्यथा उसके लिए कठिन कार्य मुश्किल हो सकता है। कठिनाइयों में भी मनोबल बना रहना चाहिए। मनोबल के बिना आदमी कोई बड़ा कार्य प्रारम्भ ही नहीं कर पाता। कल्याणकारी कार्यों में विघ्न आ सकते हैं, उन विघ्नों में भी आदमी को मनोबल रखते हुए सही मार्ग पर आगे बढ़ते रहने का प्रयास करना चाहिए। प्रबल मनोबल जाग जाए तो व्यक्ति विघ्नों को पार कर मंजिल को प्राप्त कर सकता है। पूज्यों के सामने झुकना अच्छा है, किन्तु छोटी-मोटी कठिनाइयों के सामने झुकना एक कमजोरी होती है। कठिनाइयों के सामने न झुकना चाहिए, न ही रुकना चाहिए। अपना मार्ग बनाकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में धनबल और जनबल का भी महत्त्व होता है। वचनबल भी महत्त्वपूर्ण होता है। आदमी को कमजोर नहीं रहना चाहिए। शक्तिशाली बनने का प्रयास करना चाहिए। ईमानदारी, संयम और सम्यक पराक्रम से शक्ति सुरक्षित रह सकती है और विकसित भी हो सकती है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त उपस्थित शिक्षकों व ग्रामीणों को संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई।

विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती शांति मेहर ने कहा--'गंगासागर गांव और विद्यालय परिवार की ओर से मैं गुरुजी का हार्दिक स्वागत करती हूं। आज हमारा परम सौभाग्य है कि भगवान जैसे महान ज्ञानी संत हमारे विद्यालय में पधारे हैं। गुरुजी! आप देश की सेवा और लोगों का कल्याण करने के लिए जो मानवता की अलख जगा रहे हैं, वह अपने आपमें बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आप शांति और अहिंसा के मसीहा हैं। हम आपके बताए मार्ग का अनुसरण करेंगे, यह विश्वास दिलाती हूं।'

## शनिवार की सामायिक का मनहारी दृश्य

आज सायंकाल सात बजे से आठ बजे के बीच पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में सामायिक करने हेतु पश्चिम ओड़िशा के विभिन्न क्षेत्रों के सैंकड़ों लोग उपस्थित हुए। सायंकाल सूर्यास्त के आसपास से ही लोग सोत्साह पहुंचने प्रारम्भ हो गए। निर्धारित समय से पूर्व ही प्रवास परिसर जनाकीर्ण बन गया। आचार्यप्रवर के आह्वान पर संपूर्ण श्रावक समाज में हजारों की संख्या में होने वाली सामायिक की छोटी-सी, किन्तु मनहारी झांकी पूज्य सन्निधि में दिखाई दे रही थी। पूज्यप्रवर के निर्देश के अनुसार सामायिक के दौरान 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान आदि किया गया। सामायिक की सम्पन्नता के आसपास आचार्यप्रवर ने 'स्वामीजी थांरी साधना री मेरू-सी ऊंचाई' तथा 'ज्योति का अवतार बाबा ज्योति ले आया' गीतों का आंशिक संगान किया।

आज मध्याह्न में पटनागढ़ राजपरिवार के मुखिया, ओड़िशा भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता तथा पटनागढ़ विधायक श्री कनकवर्धन सिंह देव ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती संगीतासिंह देव के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

## बेलपाड़ा में पावन पदार्पण

**२५ फरवरी।** परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः गंगासागर से बेलपाड़ा की ओर विहार किया। बेलपाड़ा के उत्साही जैन एवं जैनेतर लोग बड़ी संख्या में सूर्यादय के पूर्व ही पूज्य सन्निधि में पहुंच गए थे। रविवार होने के कारण पश्चिम ओड़िशा के अन्य क्षेत्रों के लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। विहार के दौरान 'गोहिरामुण्डा' के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आज के विहार मार्ग में आबादी कम और वन्य क्षेत्र-सा ज्यादा था। इसलिए विहार प्रलंब होते हुए भी सैंकड़ों वृक्षों की छाया प्रखर आतप से बचा रही थी।

पूज्यप्रवर ज्यों-ज्यों बेलपाड़ा की ओर बढ़ते जा रहे थे, त्यों-त्यों जनता की उपस्थिति और उसका उत्साह

भी बढ़ता जा रहा था। लोग दूर-दूर तक पूज्यप्रवर की अगवानी में पहुंच रहे थे। अपने आराध्य के अपने गांव में पदार्पण से बेलपाड़ा के श्रद्धालुओं की आंतरिक प्रसन्नता चरम को छूती-सी प्रतीत हो रही थी। जैनेतर लोग भी बड़ी संख्या में सोत्साह पूज्य सन्निधि में पहुंच रहे थे। चारों ओर प्रसन्नतामय वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। बुलंद जयनिनाद जनता की आंतरिक श्रद्धा-भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन बने हुए थे। करीब १६.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर बेलपाड़ा के बाहरी भाग में स्थित आस्था पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'तीन शब्द हैं--हेय, ज्ञेय और उपादेय। दुनिया में कुछ चीजें हेय अर्थात् छोड़ने योग्य होती हैं और कुछ चीजें उपादेय अर्थात् ग्रहण करने योग्य होती हैं। ज्ञेय अर्थात् जानने योग्य सब कुछ होता है। आदमी हेय और उपादेय--दोनों को जान ले। उसके बाद हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयास करे, यह काम्य है। आदमी को श्रेय के समाचरण का प्रयास करना चाहिए। शिकार, जुआ, स्त्रियों में अधिक आसक्ति, मद्य आदि नशीली वस्तुओं का सेवन, कठोर वचन बोलना, अर्थदूषण (धन का लेना, धन का नहीं देना, धन का विनाश और धन का परित्याग) कठोर दण्ड देना--सात व्यसन हैं। अहिंसा, मैत्री भाव, मधुर वचन आदि उपादेय हैं। आदमी हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'ओड़िशा के लोग नौ तत्त्वों को जानने का प्रयास करें, यह अभिलषणीय है। एक दोहे के माध्यम से नौ तत्त्वों के नाम कंठस्थ किए जा सकते हैं--

जानूं जीव अजीव मैं पुण्य पाप की बात।
आश्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष विख्यात।।

ओड़िशा के श्रावक-श्राविकाओं में पच्चीस बोल को कंठस्थ करने का रुझान रहना चाहिए। पच्चीस बोल एक छोटा-सा ग्रंथ है। वह कंठस्थीकरणीय अर्थात् याद करने योग्य है। वह याद हो जाए और साथ में उसकी व्याख्या जानने के लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पुस्तक 'जीव-अजीव' को अच्छी तरह पढ़ लिया जाए तो जैन तत्त्व का प्राथमिक रूप में अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की पुस्तक है 'जैन तत्त्व विद्या'। उसमें 'कालू तत्त्व शतक' की व्याख्या है। उसको पढ़कर भी तत्त्वज्ञान का बोध किया जा सकता है। कोई इससे भी आगे बढ़ना चाहे तो उसे आचार्य महाप्रज्ञजी की पुस्तक 'जैन दर्शन : मनन और मीमांसा' पढ़नी चाहिए। उस पुस्तक को यदि अच्छी तरह पढ़ लिया जाए तो जैन दर्शन का बहुत अच्छा ज्ञान हो सकता है। यों अनेक ग्रंथ हैं, जिन्हें पढ़कर तत्त्वज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

तात्विक दृष्टि से नौ तत्त्वों में पुण्य, पाप, आश्रव और बंध हेय हैं। संवर, निर्जरा और मोक्ष उपादेय हैं। जीव की शुभ प्रवृत्ति उपादेय है। व्यावहारिक संदर्भ में सात व्यसन हेय हैं। शिकार खेलना हिंसा है, पाप है। जुआ हेय है। जुआ जैसा व्यसन जिंदगी में आ जाए तो मानों जिन्दगी बर्बाद हो सकती है।'

पूज्यप्रवर ने बेलपाड़ा आगमन के प्रसंग में कहा--'आज हम पश्चिम ओड़िशा के बेलपाड़ा में आए हैं। यहां की जनता में अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्र विकसित हों, शुभाशंसा।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित बेलपाड़ावासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए।

कार्यक्रम में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में बेलपाड़ा तेरापंथी सभाध्यक्ष तथा आस्था पब्लिक स्कूल के संचालक श्री शंकर प्रसाद जैन, श्री गौतम जैन, बेलपाड़ा तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री विकास जैन, श्री मगनलाल जैन, श्रीमती पूनम-कनक जैन और बेलपाड़ा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मीना जैन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत

का संगान किया। आस्था पब्लिक स्कूल प्राथमिक के विद्यार्थियों ने स्वागत गीत का संगान किया तथा माध्यमिक की छात्राओं ने भी अपनी प्रस्तुति दी। आस्था पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री गोकुलानंद ठाकुर ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला परिवार ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। श्री राजेन्द्र डागा और सुश्री प्रेक्षा डागा ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति देते हुए पूज्यप्रवर से रायपुर-छत्तीसगढ़ में एक चतुर्मास करने की प्रार्थना की।

आज रविवार होने के कारण पश्चिम ओड़िशा के विभिन्न क्षेत्रों के न केवल सैंकड़ों श्रद्धालु, अपितु बड़ी संख्या में जैनेतर लोग भी आचार्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

**जैसी करणी, वैसी भरणी**

**२६ फरवरी।** परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः बेलपाड़ा से सलण्डी की ओर प्रस्थित हुए। 'बेलपाड़ा' के अनेकानेक श्रद्धालुओं और जैनेतर लोगों ने अपने-अपने घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर बेलपाड़ा के तेरापंथ भवन में पधारे। वहां पूज्यप्रवर की सन्निधि में संक्षिप्त कार्यक्रम समायोजित हुआ। कार्यक्रम में बेलपाड़ावासियों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। आचार्यप्रवर ने उपस्थित श्रावक समाज को पावन पाथेय प्रदान करते हुए 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार बेलपाड़ा में निवासित २८ तेरापंथी परिवारों के नाम क्रमशः उच्चरित किए गए। संबंधित परिवारों ने खड़े होकर पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की।

बेलपाड़ा के जैनेतर लोग अपने-अपने घरों के बाहर पूज्यप्रवर के स्वागत में रंगोली, कलश, नारियल, फूल, दीप आदि सजाकर खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही ओडिया महिलाएं 'हुलाहुली' के द्वारा श्रीचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रही थीं। यत्र-तत्र खड़े भावाविभूत लोग जैन साधुचर्या से अपरिचित होने के कारण पूज्यचरणों की ओर फूल उछालते हुए आचार्यप्रवर के सम्मुख जल का अर्घ्य अर्पित कर रहे थे। पूज्यप्रवर दर्शनार्थियों के भक्तिभावों को स्वीकार करते हुए उन पर आशीषवृष्टि कर रहे थे। बेलपाड़ा के बाहरी भाग के आसपास खड़ी नगर संकीर्तन मंडली कीर्तन करती हुई पूज्यप्रवर के स्वागत में उपस्थित थी। आचार्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थामे तो उसमें बड़ी संख्या में सम्मलित लोग भावविभोर हो उठे। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह से कीर्तन मंडली के लोग और अधिक उत्साह से भर उठे। उनके द्वारा और ज्यादा बुलंद स्वर में किया जाने वाला कीर्तन उनके इस उत्साह की वृद्धि को दर्शा रहा था। बताया गया कि इस मंडली में बेलपाड़ा के पुलिस अधिकारी आदि कई विशिष्ट व्यक्ति भी सम्मलित थे। 'कार' गांव के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के स्वागत में लौकिक मंगल द्रव्य सजाए खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही ग्रामीण महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा अपनी हर्षाभिव्यक्ति की। पूज्यप्रवर लगभग १३.० कि.मी. का विहार कर सलण्डी में स्थित श्री श्याम राइस मिल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात श्री रघुनाथराय कुनुराम कांसल परिवार के सदस्य अतिशय हर्षविभोर थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'एक सिद्धांत है कर्मवाद। आध्यात्मिक संदर्भों में अनेक सिद्धांत प्राप्त होते हैं। उनमें आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद आदि हैं। कर्मवाद के अनुसार प्राणी जैसा कर्म करता है, वैसा उसे फल भोगना होता है। स्वयं के कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। अच्छे कर्मों के उदय से सुख और बुरे कर्मों के उदय से दुःख प्राप्त होता है। जैन दर्शन में कर्मवाद का अच्छा विवेचन प्राप्त होता है। आठ कर्म बताए गए--ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय। पाप कर्म के उदय से आदमी को दुःख

और पुण्य के उदय से विषम परिस्थिति में भी सुख प्राप्त हो सकता है। आदमी को पापकर्म से बचने का प्रयास करना चाहिए।'

मिल से संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। श्री राकेश कांसल, श्री नीरज कांसल, श्रीमती संगीता कांसल और श्रीमती प्रियंका कांसल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। कांसल परिवार के सदस्यों ने गीत का संगान किया। कांसल परिवार की ओर से संकल्पों का उपहार समर्पित किया गया। श्री शुभकरण जैन ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। आचार्यप्रवर के एकदिवसीय प्रवास में पूरा कांसल परिवार श्रद्धा-भक्ति के साथ व्यवस्थाओं में जुटा रहा। तेरापंथ और आचार्यप्रवर के प्रति उनका आस्थाभाव अनायास मुखरित हो रहा था।

**कांटाबांजी में भव्य स्वागत**

**२७ फरवरी।** परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने सलण्डी से कांटाबांजी की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर के प्रस्थान से पूर्व ही सैंकड़ों लोग पूज्य सन्निधि में पहुंच चुके थे। पूज्यप्रवर का पदार्पण कांटाबांजी के श्रद्धालुओं को अतिशय आह्लादित बनाए हुए था। जैनेतर लोगों का भी भक्तिभाव आज विशेष रूप से मुखर बना हुआ था। सैंकड़ों लोग समूह रूप में सोत्साह पूज्यप्रवर की अगवानी में उपस्थित हो रहे थे। पश्चिम ओड़िशा के विभिन्न क्षेत्रों के भी लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में पहुंच रहे थे। इस प्रकार पूज्यप्रवर के प्रस्थान के कुछ ही समय पश्चात् हजारों लोग आचार्यप्रवर के आसपास पैदल चलने लगे। आज का विहार छोटा भले था, किन्तु पूरा मार्ग महाश्रमणमय बना हुआ था। हर ओर दृष्टिगोचर हो रहा था उल्लास, उत्साह और उमंग का उमड़ता हुआ ज्वार।

कांटाबांजी के विधायक हाजी मोहम्मद अयूब खान ने पूज्यप्रवर की भावपूर्ण अगवानी की। पुरी के कलेक्टर श्री अरविन्द अग्रवाल ने अपने शहर में आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। स्थान-स्थान पर विभिन्न समुदायों के लोग पूज्यप्रवर के स्वागतार्थ खड़े थे। मुस्लिम समुदाय के लोगों के समीप आचार्यप्रवर कुछ क्षण रुके तो वे बोले--'कांटाबांजी मुस्लिम जमात की ओर से आपका तहेदिल से इस्तकबाल करते हैं। आप यहां तशरीफ लाए, हमारी धरती पावन हो गई।' श्री गोपाल गौशाला के कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर आचार्यप्रवर गौशाला परिसर में पधारे। यहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में गौशाला के अध्यक्ष श्री राजकुमार अग्रवाल ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बड़ी संख्या में उपस्थित गौशाला से संबंधित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामे तो वे और अधिक भावविभोर हो उठे और उनके उल्लसित भावों की अभिव्यक्ति के माध्यम बने बुलंद घोष। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खड़े सेंट जेवियर हाइस्कूल के विद्यार्थियों के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने 'जीवन हम आदर्श बनाएं' गीत का आंशिक संगान भी किया।

भव्य स्वागत जुलूस में मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी युवा मंच विकास शाखा, अग्रवाल सभा ट्रस्ट, जे.सी.आई., राणी सती दादी ट्रस्ट, यंग मुस्लिम कमेटी, लायंस क्लब, ओड़िया समाज, गोपाल गौशाला कमेटी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, ब्राह्मण समाज आदि समाजों व संस्थाओं के लोग सोत्साह संभागी बने हुए थे। अनुशासन द्वार से प्रारम्भ हुआ स्वागत जुलूस सत्संग विहार, कुरली, गौशाला, चटुवनका होते हुए 'आलिशान पैलेस' परिसर में पहुंचा। पैलेस के ऑनर श्री किशनजी अग्रवाल ने अपने परिसर में आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आज का कुल विहार लगभग ४.० कि.मी. का रहा। पूज्यप्रवर का १ मार्च की सायं तक प्रवास यहीं हुआ।

## संपूर्ण शोधि और बोधि प्राप्त करें

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी आत्मा वर्तमान में पूर्णतया शुद्ध नहीं है। जो आत्मा पूर्णतया शुद्ध हो जाती है, वह सिद्ध हो जाती है। जब तक आत्मा संपूर्ण शोधि और बोधि को प्राप्त नहीं होती, तब तक वह संसार में भ्रमण करती रहती है। शोधि के चार स्थान बताए गए हैं--

१. लज्जा। निर्लज्ज व्यक्ति शोधि से दूर रहता है। लज्जावान व्यक्ति अनेक पापों से बच सकता है। जो बड़ों के प्रति संकोच का भाव रखता है, उनके अनुशासन में रहता है, वह सुखी हो सकता है। अविनीत मनुष्य, पशु और देवता दुःखी होते हैं। यदि जीवन में लज्जा, विनय और अनुशासनबद्धता होती है तो मनुष्य ही नहीं, पशु और देवता भी सुखी हो सकते हैं। लज्जा का भाव गुणसमूहों को पैदा करने वाला होता है। आदमी को पहले स्वयं पर अनुशासन करना चाहिए। उसके बाद दूसरों पर अनुशासन की बात होनी चाहिए। अनुशासन व्यक्ति के लिए ही नहीं, समाज और राष्ट्र के लिए भी कल्याणकारी होता है।

२. दया। मनुष्य में दया का भाव होना चाहिए। दूसरों पर दया करने वाला मानों स्वयं पर दया करता है। आदमी का यह प्रयास रहना चाहिए कि दूसरों को उसकी ओर से कष्ट न हो। जो दूसरों को चित्तसमाधि देने का प्रयत्न करता है, वह मानों स्वयं की चित्तसमाधि का मार्ग प्रशस्त कर लेता है। दया से चित्त शुद्ध बनता है।

३. संयम। आदमी को संयम की साधना करनी चाहिए। शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर उसका संयम रहना चाहिए। संयम के बिना जीवनरूपी वाहन गड़बड़ा सकता है। आदमी को भोजन, वाणी आदि का संयम करना चाहिए। कड़ी और बड़ी बात भी शांति के साथ प्रस्तुत करनी चाहिए। गुस्सा करना नहीं, शांति रखना, सहन करना बड़ी बात होती है।

४. ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य की साधना भी चित्त शुद्धि का स्थान है।

इन चार बातों की शिक्षा देने वाले गुरु पूजनीय होते हैं। जिसका जीवन अपनी शिक्षाओं के अनुरूप नहीं होता, ऐसे व्यक्ति की शिक्षा का कितना क्या असर हो सकता है। इसलिए त्यागी-ज्ञानी गुरु की शिक्षा ज्यादा प्रभावकारी हो सकती है।'

पूज्यप्रवर ने कांटाबांजी आगमन के प्रसंग में कहा--'आज हम कांटाबांजी में आए हैं। यह पश्चिम ओड़िशा का एक श्रद्धालु क्षेत्र है। यहां की जनता में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का विकास हो, शुभाशंसा।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य महानुभावों और अन्य कांटाबांजीवासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ तथा पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने जनता को उत्प्रेरित किया।

कांटाबांजी तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री रायचंद जैन, ओड़िशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री छत्रपाल जैन और स्थानकवासी समाज की ओर से श्रीमती दुर्गा जैन ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान करते हुए संकल्पों का उपहार श्रीचरणों में समर्पित किया। कांटाबांजी तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यप्रवर की अभिवन्दना की।

आलिशान पैलेस के ऑनर श्री किशनलाल अग्रवाल ने कहा--'जैन तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपनी धवल सेना के साथ कांटाबांजी में पावन प्रवेश हुआ है, यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है। छगनदास-खजांचीदास अग्रवाल परिवार के लिए और भी अधिक सौभाग्य की बात है कि आपके रूप में भगवान के चरण हमारे इस आलिशान पैलेस परिसर में पड़े।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

मैं किशनलाल गोयल परिवार की ओर से गुरुदेव का सादर अभिनन्दन करता हूं। प्रभो! आपकी कृपा सदैव बनी रहे।'

कांटाबांजी के विधायक हाजी मोहम्मद अयूब खान ने कहा--'मानवता के मसीहा, खुदा और अल्लाह की उपमा से उपमित आचार्यश्री महाश्रमणजी को मेरी वंदना। आप मानव कल्याण के लक्ष्य को लेकर पांव-पांव चलकर गांव-गांव में भ्रमण और लाखों-लाखों लोगों का उद्धार करते हुए आज हमारे कांटाबांजी क्षेत्र में पधारे हैं। अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों से समाज, देश व विश्व का उत्थान निश्चित रूप से होगा। मैंने तो आपकी वाणी का चमत्कार सुना है। मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूं कि आपने हमारी प्रार्थना पर ध्यान देते हुए कांटाबांजी में आने की स्वीकृति प्रदान की। इसके लिए मैं आपका तहेदिल से शुक्रगुजार हूं। उसके लिए मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपसे लिए हुए तीनों संकल्प मेरी दिनचर्या के अभिन्न अंग होंगे। यह क्षेत्र तेरापंथी श्रद्धालुओं का बहुत अच्छा क्षेत्र है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप हम ओड़िशावासियों पर अपना आशीर्वाद बनाएं रखें, ताकि हम सभी की उन्नति हो सके तथा यह ओड़िशा शांतिप्रिय राज्य के रूप में स्थापित हो सके।'

पूर्व विधायक श्री संतोष सिंह सलूजा ने कहा--'हमारे लिए अत्यंत खुशी का अवसर है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणस्पर्श से कांटाबांजी की धरती का एक-एक कण पवित्र हुआ है। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा ऐतिहासिक ही नहीं, महान भी है। आज के इस माहौल में आपकी यह पदयात्रा अत्यंत प्रासंगिक है। सरकार लाखों-करोड़ों रुपए खर्च कर भी जो कार्य नहीं कर पाती है, आप गांव-गांव में पांव-पांव चलकर कर रहे हैं। लोग पदयात्रा प्रदर्शन के लिए करते हैं, किन्तु आप लोगों के कष्ट निवारण और विश्व के कल्याण के लिए इतनी लंबी पदयात्रा कर रहे हैं। यह कार्य कोई साधारण इंसान नहीं कर सकता, मात्र भगवान ही कर सकता है। व्यक्ति की तो बात ही क्या, वाहन को भी इतनी लंबी यात्रा के लिए सर्विसिंग की आवश्यकता रहती है, किन्तु आप अपनी मस्ती में इतना महान कार्य कर रहे हैं। सन् १९७० में मुझे यहां आचार्य तुलसी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला था। कांटाबांजी में ही पुनः तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कर मैं अपने आपको धन्य मानता हूं। मैं कांटाबांजी की समस्त जनता की ओर से आपका स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

पुरी कलेक्टर श्री अरविन्द अग्रवाल ने अपने शहर में आचार्यश्री का स्वागत करते हुए कहा--'मैं अपने शहर में आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। मैं आपके दर्शन का पुनः सौभाग्य प्राप्त कर स्वयं को धन्य मानता हूं। मैं जिस मुकाम पर हूं, वह भगवान जगन्नाथ की कृपा व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद का ही परिणाम है। मैं सबसे यही आह्वान करता हूं कि अभी हमने आचार्यश्री से जो तीन प्रतिज्ञाएं स्वीकार की हैं, उन्हें हम दृढ़ता के साथ निभाएं।'

नवापुरा के पूर्व विधायक श्री राजू भाई ढ़ोलकिया ने आचार्यप्रवर से खरियार पधारने की प्रार्थना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

**विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र**

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

**ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध**

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला